बीवी का किरदार

मुआशरे में बीवी की हैसियत से औरत के किरदार की अहमियत से इंकार मुमकिन नहीं, क्यूंकि फरमाने मुस्तफा ﷺ है: خَيْرُ مَتَاعِ الدُّنْيَا الْمَرْأَةُ الصَّالِحَةُ यानी दुनिया का बेहतरीन सामान नेक बीवी है। (मुस्लिम, पृ. 595, हदीस: 3643) मुफ्ती अहमद यार खान رحمۃ اللہ علیہ नेक बीवी के बेहतरीन होने की वजह बयान करते हुए फरमाते हैं: नेक बीवी मर्द को नेक बना देती है वोह उखरवी नेमतों से है। हज़रते अली ने رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً की तफ़्सीर में फरमाया कि खुदाया हम को दुनिया में नेक बीवी दे आखिरत में आला हूर अता फरमा और आग यानी खराब बीवी के अज़ाब से बचा। (मिरकातुल मफातीह, 6/265, तहतुल हदीस: 3083) जैसे अच्छी बीवी खुदा की रहमत है ऐसी ही बुरी बीवी खुदा का अज़ाब। (मिरातुल मनाजीह, 5/4)

शादी से क़ब्ल चूंकि मां-बाप के घर में बहैसियते बेटी व बहन वगैरह औरत की ख्वाहिशात व ज़रूरयात पूरी करने और उसके नाज़ नखरे उठाने वाले कई अफ़राद मौजूद होते हैं, नीज़ उस पर इतनी ज़िम्मेदारियां भी नहीं होतीं। लेकिन शादी के बाद उसको फूंक-फूंक कर क़दम रखना पड़ता है। इसी वक्त उस की सही मुआशरती तरबियत उभर कर सामने आती है, क्योंकि बसा-औकात वह एक ऐसे नए खानदान में ब्याही जाती है, जिसके अंदाज़ और रहन-सहन के तौर तरीके उसके वालिदैन के घर से बिल्कुल जुदा होते हैं, चुनांचे अगर उसके वालिदैन ने उसकी दुरुस्त खुतूत पर तरबियत की हो और उसे घर गिरहस्ती के अलावा ससुराल वालों मसलन सास, ससुर, ननदों, देवरानियों और जेठानियों वगैरह के साथ अच्छे रवाबित रखने की ताकीद भी की हो तो न सिर्फ वह खुद सुखी रहती है बल्कि हर एक की आंख का तारा भी बन जाती है। ब-सूरत-ए-दीगर वह खुद भी ज़ेहनी कर्ब व अज़ियत में मुब्तला रहती है और दूसरों के लिए भी दर्दे सर बनी रहती है। लिहाज़ा हर वह घराना जहां औरत बहैसियते बीवी अपने घर को खुशियों का गहवारा बनाने के लिए अपना भरपूर किरदार अदा करती है तो उससे सिर्फ उसके ससुराली खानदान पर ही अच्छे असरात मुरत्तब नहीं होते बल्कि अड़ोस-पड़ोस और मुआशरे में भी उसके असरात दिखाई देते हैं। चुनांचे एक औरत को बहैसियत बीवी कैसा किरदार अदा करना चाहिए? इस हवाले से 11 मुआविन गुज़ारिशात पेशे खिदमत हैं:

1 शौहर के हुकूक की अदायगी का खुसूसी ख्याल रखे, ताकि बतौरे मिसाली बीवी उसका किरदार क़ाबिले तक़लीद समझा जाए। चुनांचे बीवी पर शौहर के हुकूक बयान करते हुए आला हज़रत رحمۃ اللہ علیہ लिखते हैं: बीवी पर शौहर के चंद हुकूक ये हैं: (1) इज़दवाजी ताल्लुकात में मुतलक़न शौहर की इताअत करना (2) उसकी इज़्ज़त की सख्ती से हिफाज़त करना (3) उसके माल की हिफाज़त करना (4) हर बात में उसकी खैर-ख्वाही करना (5) हर वक्त जाइज़ उमूर में उसकी खुशी चाहना (6) उसे अपना सरदार जानना (7) शौहर को नाम लेकर न पुकारना (8) किसी से उसकी बिला वजह शिकायत न करना (9) और खुदा तौफीक दे तो वजह होने के बावजूद शिकायत न करना (10) उसकी इजाज़त के बगैर आठवें दिन से पहले वालिदैन या एक साल से पहले दीगर महारिम के यहां न जाना (11) वह नाराज़ हो तो उसकी बहुत खुशामद कर के मनाना। (फतावा रज़विया, 24/371 मुलख्खसन)

2 शौहर की ना-शुक्री ऐसी बुरी आदत से बीवी का किरदार बे-दाग होना चाहिए। क्योंकि शौहर की ना-शुक्री करना ऐसा बुरा अमल है जिसके सबब कसीर औरतें जहन्नम में दाखिल होंगी।

(बुखारी, 3/463, हदीस: 5197 माखूज़ा)

3 बीवी को चाहिए कि वह हर मामले में शौहर की पसंद व ना-पसंद को पेशे नज़र रखे, क्योंकि जो बीवी सिर्फ अपनी पसंद को तरजीह देती है तो शौहर भी "या शैख अपनी अपनी देख के मिस्दाक़" उसकी पसंद व ना-पसंद से ला-परवाही का मुज़ाहिरा करने लगता है।

4 शौहर की तनख्वाह कम हो तो बीवी को चाहिए कि वह शौहर पर तनकीद या नुक्ता-चीनी करने के बजाय सब्रो रिज़ा का अमली नमूना बन कर रहे। जो बीवी अपने शौहर को तनख्वाह कम होने का ताना देती रहती है वह शौहर के दिल में नफरत को परवान चढ़ाने का सबब बनती है या फिर उसकी वजह से शौहर रिश्वत व दीगर ना-जाइज़ आमदनी के ज़रिए अपना कर मुआशरे में बिगाड़ का सबब बनता है, यानी दूसरे अल्फ़ाज़ में कहा जा सकता है कि अक्सर मर्द बीवियों की ना-जाइज़ व बेजा ख्वाहिशात की तकमील के लिए हराम कमाई के ज़रिए इख्तियार करते हैं।

5 बतौरे बीवी हर औरत का किरदार एक हमदर्द व ग़मगुसार का सा होना चाहिए, मसलन शौहर किसी वजह से परेशान व रंजीदा हो तो वह उसे तसल्ली दे और उसकी ढ़ारस बंधाए। नबी करीम صلى الله عليه وسلم जब परेशान होते तो उम्मुल मोमिनीन हज़रते खदीजा رضی اللہ عنہا आपकी मूनिस व ग़मगुसार और मददगार होती थीं। (मिरातुल मनाजीह, 8/497 माखूज़ा)

6 बतौरे बीवी हर औरत को चाहिए कि वह शौहर के वालिदैन को अपने वालिदैन और उसकी बहनों को अपनी बहनें समझ कर उन से अच्छे ताल्लुकात रखे, बिल-फर्ज़ कभी किसी ना-चाक़ी का सामना करना पड़े तो भी सब्र से काम ले कि बहनों और वालिदैन में नाराज़गी ज़्यादा देर नहीं रहती, बल्कि वह खुद उन्हें राज़ी करने की कोशिश करे, इससे इज़्ज़त कम नहीं होगी, बल्कि बढ़ेगी।

7 जाइज़ बातें सब की मानें, क्योंकि गैर शरई मामलात में किसी की भी इताअत करना जाइज़ नहीं, चुनांचे हदीसे पाक में है: खालिक की ना-फरमानी में मखलूक की इताअत नहीं। (मोजम कबीर, 18/170, हदीस: 381)

8 बीवी को चाहिए कि वह हमेशा अपने शौहर की एहसानमंद रहे कि वह उसकी और बच्चों की ज़रूरयात पूरी करने की खातिर सारा दिन भाग-दौड़ में मसरूफ रहता है।

9 ज़बान-दराज़ी व बहस-बाज़ी करना, जली-कटी सुनाते रहना, सख्त लहजा अपनाना, कोसना, बाज़ारी ज़बान इस्तेमाल करना और माज़ी की तल्ख यादों पर मुश्तमिल दुखड़े सुनाते रहना वह बुरी आदात हैं जो मियां-बीवी की ज़िन्दगी में ज़हर घोलते और आपस के ताल्लुकात को दीमक की तरह चाटते रहते हैं। लिहाज़ा बीवी को इन आदाते बद से अपने दामन को साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ रखना चाहिए।

10 किरदार ऐसा पाकीज़ा रखना चाहिए कि अगर उसका शौहर, सास या ननदें वगैरह पहले नमाज़ नहीं पढ़ते थे या गुनाहों में मुब्तला थे तो उसके किरदार से मुतास्सिर हो कर वह भी नेक नमाज़ी बन जाएं।

11 मिसाली बीवी बनने के लिए औरत पर लाज़िम है कि वह अपने जिस्म, लिबास और घर की सफाई-सुथराई वगैरह का खास ख्याल रखे। परागंदा बाल और मैली-कुचैली न रहे बल्कि अपने शौहर के लिए खूब बनाओ-सिंगार करे क्योंकि इससे शौहर का दिल खुश होता है और नबी अकरम صلى الله عليه وسلم ने नेक बीवी की खूबियों में से एक खूबी यह भी बयान फरमाई: وَاِنْ نَظَرَ اِلَيْهَا سَرَّتْهُ यानी अगर उसका शौहर उसे देखे तो वह उसे खुश कर दे। (इब्ने माजह, 2/414, हदीस: 1857)

Biwi ka Kirdar

Binte Allah Bakhsh Attariya

Mu'ashrae mein biwi ki haisiyat se aurat ke kirdar ki ahmiyat se inkar mumkin nahi, kyunke Farman-e-Mustafa صلی اللہ علیہ والہ وسلم hai: خَيْرُ مَتَاعِ الدُّنْيَا الْمَرْأَةُ الصَّالِحَةُ yani dunya ka behtareen saman naik biwi hai. (Muslim, p. 595, Hadith: 3643) Mufti Ahmad Yar Khan رحمۃ اللہ علیہ naik biwi ke behtareen hone ki wajah bayan karte hue farmate hain: Naik biwi mard ko naik bana deti hai woh ukhrawi ne'maton se hai. Hazrat-e-Ali رضی اللہ عنہ ne رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً ki tafseer mein farmaya ke Khudaya ham ko dunya mein naik biwi de, akhirat mein aala Hoor ata farma aur aag yani kharab biwi ke azab se bacha. (Mirqat ul-Mafatih, 6/265, taht-ul-hadith: 3083) Jaisay achhi biwi Khuda ki rahmat hai aisi hi buri biwi Khuda ka azab.

(Mirat ul-Manajih, 5/4)

Shadi se qabl chunke maan baap ke ghar mein bahaishiyat beti wa bahan waghaira aurat ki khwahishat wa zarooryat poori karne aur us ke naaz nakhre uthanay walay kai afraad maujood hotay hain, neez us par itni zimmedariyan bhi nahi hotin. Lekin shadi ke baad us ko phoonk phoonk kar qadam rakhna parta hai. Isi waqt us ki sahi mua'ashrati tarbiyat ubhar kar samne aati hai, kyunke basa-auqat woh aik aise naye khandan mein biyahi jati hai, jis ke andaz aur rahen-sahen ke taur tariqe us ke walidain ke ghar se bilkul juda hote hain, chunanche agar us ke walidain ne us ki durust khutoot par tarbiyat ki ho aur use ghar-grihasti ke ilawa sasural walon maslan saas, susar, nandon, dewaraniyon aur jethaniyon waghaira ke sath achhe rawabit rakhne ki takeed bhi ki ho to na sirf woh khud sukhi rehti hai balke har aik ki aankh ka tara bhi ban jati hai. Ba-surat-e-digar woh khud bhi zehni karb wa aziyat mein mubtala rehti hai aur doosron ke liye bhi dard-e-sar bani rehti hai. Lehaza har woh gharana jahan aurat bahaishiyat biwi apne ghar ko khushiyon ka gahwara banane ke liye apna bharpoor kirdar ada karti hai to us

se sirf us ke sasurali khandan par hi achhe asaraat murattab nahi hote balke paros aur mu'ashre mein bhi us ke asraat dikhayi dete hain.

Chunanche aik aurat ko bahaishiyat biwi kaisa kirdar ada karna chahiye? Is hawale se 11 mu'awin guzarishat pesh-e-khidmat hai:

1. Shauhar ke huqooq ki adayigi ka khusoosi khayal rakhe, taake bataur-e-misali biwi us ka kirdar qabil-e-taqleed samjha jaye. Chunanche biwi par Shauhar ke huqooq bayan kartay hue Aala Hazrat رحمۃ اللہ علیہ likhte hain: Biwi par Shauhar ke chand huqooq ye hain: (1) Izdwaji talluqat mein mutlaqan Shauhar ki ita'at karna (2) Us ki izzat ki sakhti se hifazat karna (3) Us ke maal ki hifazat karna (4) Har baat mein us ki khair-khwahi karna (5) Har waqt jaiz umoor mein us ki khushi chahna (6) Use apna sardar jaanna (7) Shauhar ko naam le kar na pukarna (8) Kisi se us ki bila-wajah shikayat na karna (9) Aur Khuda taufiq de to wajah honay ke bawajood shikayat na karna (10) Us ki ijazat ke baghair aathwein din se pehle walidain ya aik saal se pehle digar maharim ke yahan na jana (11) Woh naraz ho to us ki bahut khushamad kar ke manana.

(Fatawa Razawiyya, 24/371 mulakhasan)

2. Shauhar ki na-shukri; aisi buri aadat se biwi ka kirdar be-dagh hona chahiye. Kyunke Shauhar ki na-shukri karna aisa bura amal hai jis ke sabab kaseer aurtain jahannam mein dakhil hon'gi. (Bukhari, 3/463, Hadith: 5197)

3. Biwi ko chahiye ke woh har muamlay mein Shauhar ki pasand wa na-pasand ko pesh-e-nazar rakhe, kyunke jo biwi sirf apni pasand ko tarjih deti hai to Shauhar bhi "Ya sheikh apni apni dekh ke misdaq" us ki pasand wa na-pasand se la-parwahi ka muzahira karne lagta hai.

4. Shauhar ki tankhwah kam ho to biwi ko chahiye ke woh Shauhar par tanqeed ya nukta-chini karne ke bajaye sabr-o-riza ka amli namuna ban kar rahe. Jo

biwi apnay Shauhar ko tankhwah kam honay ka tana deti rehti hai woh Shauhar ke dil mein nafrat ko parwan charhane ka sabab banti hai ya phir us ki wajah se Shauhar rishwat wa digar na-jaiz amdani ke zaraye apna kar mu'ashre mein bigaar ka sabab banta hai, yani doosre alfaz mein kaha ja sakta hai ke aksar mard biwiyon ki na-jaiz wa be-ja khwahishat ki takmeel ke liye haram kamai ke zaraye ikhtiyar karte hain.

5. Bataur-e-biwi har aurat ka kirdar aik humdard wa gham-gusar ka sa hona chahiye, maslan Shauhar kisi wajah se pareshan wa ranjeeda ho to woh usay tasalli de aur us ki dhaaras bandhwaye. Nabi Kareem ﷺ jab pareshan hotay to Umm-ul-Momineen Hazrat-e-Khadija Radiyallahu Anha aap ki moons wa gham-gusar aur madadgar hoti thin.

(Mirat al-Manajih, 8/497)

6. Bataur-e-biwi har aurat ko chahiye ke woh Shauhar ke walidain ko apnay walidain aur us ki behno ko apni behnein samajh kar un se achhay taluqat rakhe, bil-farz kabhi kisi na-chaqi ka samna karna pare to bhi sabr se kaam le ke behno aur walidain mein narazi zyada der nahi rehti, balkay woh khud unhein razi karne ki koshish kare, is se izzat kam nahi hogi, balkay barhay gi.

7. Jaiz baatein sab ki manein, kyunke ghair-sharyi muamlat mein kisi ki bhi ita'at karna jaiz nahi, chunanchay Hadith-e-Pak mein hai: Khaliq ki nafarmani mein makhluq ki ita'at nahi.

(Mu'jam Kabeer, 18/170, Hadith: 381)

8. Biwi ko chahiye ke woh hamesha apne Shauhar ki ihsan-mand rahe ke woh us ki aur bacchon ki zarooryat poori karne ki khatir sara din bhag-daur mein masroof rehta hai.

9. Zaban-darazi wa bahas-bazi karna, jali-kati sunate rehna, sakht lehja apnana, kosna, bazari zaban istemal karna aur mazi ki talkh yaadon par mushtamil dukhre sunate rehna woh buri aadaat hain jo mian-biwi ki zindagi mein

zeher gholte aur aapas ke taluqat ko deemak ki tarah chaat-te rehte hain. Lehaza biwi ko in aadat-e-bad se apne daman ko saaf wa shaffaf rakhna chahiye.

⑩ Kirdar aisa pakiza rakhna chahiye ke agar us ka Shauhar, saas ya nanadein waghaira pehle namaz nahi parhte the ya gunaahon mein mubtala the to us ke kirdar se mutassir ho kar woh bhi naik namazi ban jayein.

⑪ Misali biwi ban'ne ke liye aurat par lazim hai ke woh apne jism, libas aur ghar ki safayi suthrai waghaira ka khaas khayal rakhe. Paraganda baal aur maili-kuchaili na rahe balke apne Shauhar ke liye khoob banao singhar kare kyunke is se Shauhar ka dil khush hota hai aur Nabi Akram ﷺ ne naik biwi ki khubiyon mein se aik khubi ye bhi bayan farmai: وَاِنْ نَظَرَ اِلَيْهَا سَرَّتْهُ yani agar us ka Shauhar usay dekhe to woh usay khush kar de.

(Ibn-e-Majah, 2/414, Hadith: 1857)